

## पाठ 5— अध्याय 4 और 5

गिनती 4 में मुख्य कहानी वह है जिसे आम तौर पर दूसरी लेवी जनगणना कहा जाता है। जानकारी बहुत सीधी है, इसलिए हम वहाँ बहुत ज्यादा नहीं रुकेंगे। और यह जनगणना पहले की लेवी जनगणना से अलग है जिसे परमेश्वर ने स्वयं किया था, मुख्य रूप से इस नई जनगणना में गिने जाने वाली आयु सीमा 30 वर्ष से 50 वर्ष तक थी एक संकीर्ण 20 वर्ष की आयु सीमा (पहली लेवी जनगणना में 1 महीने और उससे अधिक उम्र के पुरुषों की गणना की गई थी)। इस विशेष आयु सीमा को निर्दिष्ट करने का कारण (हालाँकि विशेष रूप से नहीं बताया गया है) इस काम की भारी प्रकृति है जिसमें अभयारण्य की वस्तुओं और टुकड़ों को ले जाना और गार्ड ड्यूटी करना शामिल है। विचार यह है कि इन पुरुषों को बहुत ज़िम्मेदार और भावनात्मक रूप से परिपक्व होना चाहिए ताकि वे अपने काम को पूर्ण समर्पण के साथ कर सकें और उन्हें शारीरिक रूप से भारी वस्तुओं को उठाने और ज़रूरत पड़ने पर हाथ से हाथ की लड़ाई में अभयारण्य की रक्षा करने में सक्षम होना चाहिए।

### गिनती 4 पूरा पढ़ें

जनजातीयता बाइबिल की संस्कृति है, जब तक हम इसे आत्मसात नहीं कर लेते और इससे निपट नहीं लेते, हम शास्त्रों को आकार देने वाली कई कथाओं में जो कुछ हो रहा है, उसमें से बहुत कुछ चूक जाएँगे। हमारी पश्चिमी सभ्यता में जनजातीयता के तरीके आमतौर पर या तो हमें बिल्कुल भी ज्ञात नहीं होते हैं या उन्हें बहुत गलत तरीके से समझा जाता है। यह समझना महत्वपूर्ण है कि जनजातीयता नैतिक रूप से तटस्थ है, यह न तो अच्छा है और न ही बुरा। प्राचीन दुनिया के लिए जनजातीयता एक बहुत ही स्वाभाविक सामाजिक संरचना थी। यूरोप में मध्ययुगीन काल तक जनजातीयता दुनिया भर में प्रमुख सामाजिक संरचना थी, क्योंकि यह पारिवारिक संबंधों पर आधारित थी और रक्त का बंधन हमेशा मानव जाति के लिए सहज, सहज और शक्तिशाली रहा है।

मध्यकालीन समय तक यूरोपीय सामाजिक संरचना धार्मिक और राष्ट्रीय पहचान के संयोजन से परिवर्तित हो गई, इस प्रकार विश्व के उस भाग में जनजातीयवाद पीछे छूटने लगा।

17 वीं शताब्दी के अंत और 18वीं शताब्दी के प्रारंभ में यूरोप और नई दुनिया में एक और परिवर्तन हुआ, जिसका मार्गदर्शन उस काल के नेताओं और दार्शनिकों द्वारा किया गया, जिसे इतिहास अब ज्ञानोदय कहता है, जब धार्मिक पहचान पर प्रश्न उठाए गए और उसका स्थान

नास्तिक दृष्टिकोण ने ले लिया तथा सामान्य विश्वासों या रक्त के बजाय अर्थशास्त्र पर आधारित विशुद्ध धर्मनिरपेक्ष सरकारों और सामाजिक संरचनाओं की इच्छा ने ले ली।

समस्या यह है कि ज्ञानोदय ने पारिवारिक संबंधों को भी खत्म कर दिया (पारिवारिक संबंध आदिवासीवाद का मूल हैं) और इस प्रकार आज पश्चिमी समाज छोटे परिवार इकाइयों के संग्रह और ढीले नेटवर्क बन गए हैं जिन्हें मानवविज्ञानी एकल परिवार कहते हैं। इसका मतलब यह है कि परिवार की अवधारणा को आम तौर पर एक माँ, पिता और उनके तत्काल बच्चों से मिलकर पुनर्परिभाषित किया गया है। परमाणु परिवार शब्द परमाणु बम के आविष्कार को संदर्भित नहीं करता है। हालाँकि यह हमें एक अच्छा उदाहरण प्रदान करता है: जैसे एक परमाणु अपनी प्राकृतिक अवस्था में एक केंद्र होता है जिसे परमाणु कहा जाता है।

एक नाभिक जिसके चारों ओर इलेक्ट्रॉन और प्रोटॉन परिक्रमा करते हैं, नई आधुनिक पश्चिमी परिवार इकाई एक परमाणु के समान है जिससे उसके इलेक्ट्रॉन और प्रोटॉन छीन लिए गए हैं और जो कुछ बचा है वह नाभिक है। पश्चिम में परिवार की इस नई परिभाषा के भीतर, कानूनी पारिवारिक अधिकार आमतौर पर दो पीढ़ी के रिश्ते तक सीमित हैं। दादा-दादी को बाहरी माना जाता है; चाची, चाचा और चचेरे भाई अब कानूनी रूप से (और अधिकांश मामलों में व्यावहारिक रूप से) "दूर के रिश्तेदार हैं जिनका आपके व्यक्तिगत परमाणु परिवार से केवल सबसे मामूली संबंध है।

और बेशक हम सभी जानते हैं कि पश्चिम में पारिवारिक संबंधों का और भी विकास हो रहा है जो व्यक्तियों के बीच दीर्घकालिक प्रतिबद्धता या बंधन की आवश्यकता को नकारता है, या यहाँ तक कि परिवार के मुखिया के रूप में माता और पिता की उपस्थिति या रक्त संबंधों की वांछनीयता को भी नकारता है। अनिवार्य रूप से नवीनतम आधुनिक युग की सामाजिक इकाई जिसकी वकालत और कानून विकसित दुनिया में लगातार बढ़ते दायरे में किया जा रहा है, वह एक पैक मानसिकता के समान है, जिसके तहत ज्यादातर असंबंधित और अप्रतिबद्ध व्यक्ति थोड़े समय के लिए एक साथ रहना चुनते हैं ताकि संगति, या समूह सुरक्षा, या शायद एक कथित आर्थिक लाभ की कुछ तत्काल या मध्यवर्ती आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके।

दूसरे शब्दों में, आज हम जनजातीयता से इतने दूर हो चुके हैं कि हमारे मस्तिष्क के लिए इसे समझ पाना लगभग असंभव है, और इस प्रकार हम इसे तुरंत एक नकारात्मक या पिछड़ी संस्था के रूप में देखते हैं। लेकिन आपको यह जानकर आश्चर्य हो सकता है कि संयुक्त राष्ट्र और दुनिया की अधिक शक्तिशाली सरकारों के सर्वोत्तम प्रयासों के बावजूद आज भी दुनिया का

अधिकांश भाग आदिवासी है। इस प्रकार इस्लाम और यहूदी-ईसाई धर्म के बीच टकराव के कई स्रोतों में से एक है, एक आदिवासी मानसिकता जो पूरी तरह से परिवार और आस्था पर आधारित है, बनाम एक पश्चिमी समाज जो व्यक्तिवाद और नैतिक सापेक्षवाद के इर्द गिर्द घूमता है।

मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि बाइबिल को समझने के लिए हमें जनजातीय संरचना और मानसिकता को समझने की आवश्यकता है। और जनजातीय संस्कृति के भीतर सबसे प्रभावशाली सामाजिक इकाई कबीला है; कबीला एक बड़ा विस्तारित परिवार होता है जो अक्सर अपनी अर्थव्यवस्था और सरकार होता है यदि वह समय के साथ काफी बड़ा हो गया हो। एक गोत्र की पहचान हमेशा उस संस्थापक से जुड़ी होती है जिसके नाम पर गोत्र का नाम रखा गया था, गोत्र के सदस्यों की वफादारी अपरिवर्तनीय होती है और सदियों तक फैली हो सकती है। इसके अलावा यह सामान्य है कि एक गोत्र के भीतर कुछ गोत्र प्रमुख हो जाते हैं, जबकि अन्य कमतर, अधीनस्थ हो जाते हैं, या यहाँ तक कि खत्म हो जाते हैं या प्रमुख लोगों द्वारा अवशोषित हो जाते हैं। इस प्रकार जब हम आज (और प्राचीन समय में) "जनजातीय युद्ध" शब्द सुनते हैं तो अक्सर ऐसा होता है कि दो कबीलों के बीच लड़ाई नहीं होती है, बल्कि एक गोत्र को बनाने वाले कबीलों के बीच लड़ाई होती है। जनजातीयता में गोत्र की श्रेष्ठता के लिए कभी न खत्म होने वाली लड़ाई होती है; जनजातीयता के भीतर प्रत्येक गोत्र की स्थिति ही सब कुछ होती है। और हमारे बाइबिल के ग्रंथों के अंतर्गत प्रभुत्व के लिए यह जनजातीय संघर्ष है। इसे ध्यान में रखें, खासकर जब हम तोरह और पुराने नियम की पुस्तकों का अध्ययन करते हैं और यह यहाँ गिनती में सबसे आगे और बीच में दिखाई देता है।

गिनती 4 में इस नई जनगणना में गिने जाने वाले लेवियों का पहला वंश कहानियों का है। यह पहली जनगणना से अलग है क्योंकि पिछली जनगणना में गेशोन के गोत्र को सबसे पहले गिना गया था क्योंकि गेशोन ज्येष्ठ पुत्र था। इस जनगणना में कोहाथियों को प्राथमिकता का दर्जा दिए जाने का संभावित कारण यह है कि यह कबीला सबसे पवित्र और इसलिए सबसे खतरनाक वस्तु का परिवहन करता था। इसके अलावा हारून और मूसा (न केवल लेवी के बल्कि पूरे इस्राएल के नेता) कोहाथ के गोत्र से संबंधित थे, इसलिए इसने कोहाथियों को महत्वपूर्ण जनजातीय दर्जा दिया।

अब जहाँ तक विभिन्न लेवी कुलों के बीच जनजातीय स्थिति का सवाल है, हम अभी इस पर चर्चा नहीं करेंगे, लेकिन मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि समय के साथ लेवी कुलों के बीच श्रेष्ठता का क्रम बदल जाएगा। यहाँ तक कि कुछ कर्तव्य आम लोगों से लेवियों के पास, फिर

लेवियों से पुजारियों के पास चले जाएँगे। यह कुछ बाइबिल विद्वानों को बहुत परेशान करता है क्योंकि उन्हें डर है कि पुराने नियम के बाद की किताबों में हमें जो जानकारी मिलती है, जो कभी-कभी पुरोहिताई की एक अलग तस्वीर पेश करती है, वह त्रुटियाँ या राजनीतिक उद्देश्य के लिए गंभीर संशोधन या पुजारी और लेवियों के संचालन के तरीके में इन परिवर्तनों के संबंध में विसंगतियाँ हैं। व्यक्तिगत रूप से मुझे लगता है कि यह शास्त्रों को और भी अधिक विश्वसनीय बनाता है, क्योंकि भले ही इस्राएल धीरे-धीरे बाकी दुनिया से एक अलग संस्कृति विकसित कर रहा था, लेकिन वे एक अलग ग्रह पर रहना शुरू नहीं कर रहे थे। सदियों से मौसम के बदलते पैटर्न से लेकर प्रौद्योगिकी के विकास तक, सामाजिक जनसांख्यिकी में उतार-चढ़ाव से लेकर अधिक सरल मूर्त चीजों जैसे कि जंगल के तम्बू को बंद करना और इसे एक स्थायी मंदिर के साथ बदलना, यहाँ तक कि किसी भी समय इस्राएल पर किस राष्ट्र का शासन हो सकता था (असीरिया, बेबीलोन, रोमन, आदि), यह ऐसा बनाता है कि अनुष्ठान और समारोह जिस सटीक तरीके से किए जाते थे (या किए जा सकते थे)...और उन्हें कौन करता था, उसे बदलना पड़ा। यदि हम यह पढ़ें कि ये चीजें पहली बार प्रस्तुत किए जाने के बाद से 14 या 15 शताब्दियों की अवधि में कभी नहीं बदलीं, तो यह गंध परीक्षण में पास नहीं होगा, क्योंकि यह वास्तविक जीवन नहीं है।

उदाहरण के लिए, आज लोग इस बात पर बहस कर सकते हैं कि उचित कोषेर खाद्य नियम क्या हैं; लेकिन वास्तव में कोई भी कोषेर खाद्य कानूनों का ठीक उसी तरह पालन नहीं कर सकता जैसा कि तोरह में बताया गया है क्योंकि माँस के अंशों को समर्पित करने के लिए कोई मंदिर नहीं है और वध की अध्यक्षता करने के लिए कोई पुजारी नहीं है। इसलिए हम परिस्थितियों के अनुसार अपना सर्वश्रेष्ठ करते हैं। मुझे अमेरिका में ऐसे कोई खेत और फसल भूमि के बारे में पता नहीं है जो सब्ज और जयंती कानूनों के माध्यम से विनियमित हैं। इसलिए, जो भूमि उस तरह से विनियमित नहीं है, उस पर जो उगता है यह शास्त्र के अनुसार कोषेर नहीं है। वास्तव में इस्राएल में उगाया जाने वाला बहुत कम भोजन बाइबिल के अनुसार कोषेर होने के लिए कानून का पालन करता है। हम इस बात पर बहस कर सकते हैं कि विभिन्न आवश्यक बाइबिल त्योहारों को कैसे मनाया जाए। लेकिन कम से कम उनमें से 3 के लिए जिनके लिए प्रभावशाली होने के लिए पवित्र भूमि की तीर्थयात्रा की आवश्यकता होती है, हम उन्हें बिल्कुल वैसे नहीं कर सकते हैं जैसा कि कहा गया है, चाहे कुछ भी हो क्योंकि यरूशलेम जाने का मुख्य उद्देश्य मंदिर में पूजा और बलिदान करना था, न कि केवल यरूशलेम शहर का दौरा करना। कुछ अनुष्ठान जैसे जल अर्पण समारोह, जो कुछ हद तक किया जा सकता था, को महान वेदी के ऊपर किया जाना

आवश्यक है, जो अब मौजूद नहीं है। ये सिर्फ कुछ उदाहरण है जिनका सामना आज के यहूदी (और हम विश्वासियों के रूप में) बाइबिल के नियमों से निपटने के प्रयास में कराते हैं, जो कि हमारे नियंत्रण से परे परिस्थितियों के कारण, निर्धारित तरीके से पूरा नहीं किया जा सकता है, और इसी तरह इस्राएलियों को भी माउंट सिनाई के बाद वर्षों बीतने के साथ इसका सामना करना पड़ा।

इसलिए इनमें से कुछ बदलावों को हम देखेंगे यहाँ तक कि जब हम गिनती से व्यवस्थाविवरण की ओर बढ़ेंगे, तो आप खुद को भ्रमित न करें। परिस्थितियों में ये बदलाव यहोवा के लिए कोई आश्चर्य की बात नहीं थे और आवश्यक पवित्र अनुष्ठानों की सटीक प्रकृति का पूरा बिंदु शिक्षण और आज्ञाकारिता के इर्द-गिर्द घूमता था, हाथों की हरकतों की कोई जादुई या रहस्यमय प्रकृति नहीं, या तांबे के कटोरे पर सोने के कटोरे का उपयोग, या धूप जलाने की शक्ति, या क्या एक प्रकार का भोजन दूसरे प्रकार के भोजन की तुलना में आवश्यक रूप से स्वस्थ है, इत्यादि।

जैसे-जैसे हम पद 5 में आगे बढ़ते हैं, हम पाते हैं कि तम्बू की पवित्र वस्तुएँ और साज-सामान इतने पवित्र थे कि उन्हें सीधे लेवियों द्वारा नहीं संभाला जा सकता था। इसलिए उन्हें याजकों द्वारा लपेटा और पैक किया जाना था, और फिर परिवहन के लिए कहानियों की देखभाल में सौंप दिया जाना था, ताकि जो लोग पर्याप्त रूप से पवित्र स्थिति के नहीं थे, उनके हाथ गलती से किसी पवित्र चीज़ को न छू लें।

उदाहरण के लिए : हम देखते हैं कि पवित्र स्थान के अंदरूनी पर्दे को पुजारियों द्वारा हटाया जाना था, और फिर इसका उपयोग वाचा के सन्दूक को लपेटने के लिए किया गया था। फिर उसके ऊपर (संभवतः) पोरपोईस की खाल की एक जलरोधक परत डाली गई थी। पैकेज की अंतिम परत एक विशेष शुद्ध नीला कपड़ा था, और फिर कीमती माल को ले जाने के लिए डंडे डाले गए थे। पुजारियों ने इसे कोहाथियों को सौंपने से पहले यह सारी तैयारी पूरी कर ली थी, जिन्हें केवल ले जाने वाले डंडों को छूकर पवित्र वस्तु को संभालने की अनुमति थी। वास्तव में बाद में बाइबिल में हम कुछ अलग-अलग घटनाओं के बारे में पढ़ेंगे जब सन्दूक को ले जाया जा रहा था और वह गिरने वाला लग रहा था; इसलिए एक अनधिकृत व्यक्ति ने इसे संभालने के लिए हाथ बढ़ाया, और वे तुरंत मारे गए।

इसके बाद शोब्रेड की मेज पर भी एक नीला कपड़ा बिछाया जाना था जिस पर अनुष्ठान सेवाओं में इस्तेमाल किए जाने वाले विभिन्न बर्तन रखे जाने थे, साथ ही 12 रोटियों का एक नया

समूह भी रखा जाना था जिसे रखने के लिए इसे बनाया गया था। फिर क्रिमसन (लाल) कपड़े के एक आवरण से पूरी चीज को लपेटा गया, और फिर उसके ऊपर पोरपोइज़ की खाल की एक जलरोधक परत रखी गई। मेज पर छल्ले बनाए गए थे, जैसा कि वाचा के सन्दूक में था, इसलिए ले जाने के लिए छल्लों के माध्यम से डंडे डाले गए; अब यह कोहाथियों की देखभाल में स्थानांतरित करने के लिए तैयार था।

अगली सबसे महत्वपूर्ण वस्तु थी मेनोराह और उसे संभालने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले विभिन्न उपकरण, उन्हें एक नीले कपड़े में लपेटा गया था, और उसके ऊपर उसे सूखा रखने के लिए कुछ शिशुमार की खालें रखी गई थीं, और फिर उसे परिवहन के लिए एक विशेष लकड़ी के फ्रेम पर रखा गया था।

पद 11 में धूप की स्वर्ण वेदी जो परोखेत (पवित्र स्थान और परम पवित्र स्थान के बीच का आंतरिक पर्दा) के सामने खड़ी थी, उस पर एक नीला कपड़ा बिछा हुआ था, और फिर उसे फिर से एक अधिक जलरोधी आवरण में ढक दिया गया था। इसके बाद तम्बू के अंदर इस्तेमाल किए जाने वाले शेष सेवा बर्तनों को अधिकतम सुरक्षा के लिए नीले कपड़े और हॉलिकन की खाल में लपेटा गया था।

अब जबकि याजकों ने मिलापवाले तम्बू के अन्दर उपयोग की गई सभी वस्तुओं को समेट लिया है, तो पाठ तम्बू के बाहर की वस्तुओं की ओर ध्यान देते हैं जो कि प्रांगण में थी; और इसकी शुरुआत होमबलि की वेदी से होती है।

वेदी से राख हटाने के बाद उस पर बैंगनी रंग का कपड़ा रखा जाता है। उस पर वेदी की सेवा और देखभाल के लिए इस्तेमाल की जाने वाली सभी चीजें जैसे आग जलाने वाले चिमटे और खून के बर्तन वगैरह रखे जाते हैं। उसके ऊपर और डॉल्फिन की खालें रखी जाती हैं।

सभी पवित्र वस्तुओं को पुजारियों द्वारा ढककर तैयार कर दिया गया है और अब उन्हें परिवहन के लिए कोहाथ के गोत्र को सौंप दिया गया है। इनमें से कोई भी वस्तु यहाँ तक कि उनके आवरण भी कोहाथियों द्वारा नहीं छुए जाएँगे, उस उल्लंघन के लिए दंड तत्काल मृत्यु है। बल्कि अधिकांश बड़ी वस्तुओं में लोहे के छल्ले थे जिनमें डंडे डाले गए थे, और छोटी वस्तुओं को किसी प्रकार के लकड़ी के फ्रेम के ऊपर ले जाया गया था।

पद 16 हमें बताता है कि पुजारी, एलीआजर, सभी पवित्र वस्तुओं के परिवहन के संबंध में लेवियों पर पर्यवेक्षक है। इसके अलावा प्रभु ने मूसा और हारून से बात की, और उन्हें बताया कि

कहानियों पर पूरी निगरानी होनी चाहिए क्योंकि उनका काम इतना खतरनाक है कि उन्हें अपने काम के लिए तैयार रहना चाहिए।

कुछ भी संयोग पर नहीं छोड़ा जा सकता। पवित्र फर्नीचर के खुले टुकड़े पर एक नज़र डालना किसी अनधिकृत दर्शक के लिए घातक साबित हो सकता है। अब हम यह देखना शुरू करते हैं कि परमेश्वर ने क्यों जोर दिया कि केवल 30 से 50 वर्ष की आयु के पुरुष ही यह कार्य कर सकते हैं; युवा पुरुष अपने कर्तव्यों में बहुत लापरवाह हो सकते हैं और खुद को मरते हुए पा सकते हैं, और परमेश्वर की पवित्रता पर हमला हो सकता है।

अब गेशॉन के कुलों की गिनती की जानी है और गिनती में केवल 30 से 50 वर्ष की आयु के पुरुष शामिल हैं। यह विशेष आयु वर्ग है जिसे उन वस्तुओं से निपटना है जिनका उल्लेख पहले ही किया जा चुका है; मुख्य रूप से, पवित्र तम्बू के विभिन्न आवरण। इन पुरुषों को हारून के दूसरे बेटे, इतामार की सीधी निगरानी में रहना है।

इसी प्रकार के आदेश पद 29 में मरारी के कुलों के लिए दिए गए हैं और वे भी इतामार के पर्यवेक्षण के अधीन हैं।

पद 34 से शुरू करते हुए हमें इस नवीनतम गणना का परिणाम मिलता है और हम पाते हैं कि कहानियों में 30–50 आयु वर्ग के 2750 पुरुष थे, गेशॉनियों में 2630, और मरारी वंशों में 3200 पुरुष थे, कुल मिलाकर 8580 थे।

यह दिलचस्प है कि हम कैसे देखते हैं कि ईश्वर का एक आधारभूत सिद्धांत, विभाजन, चुनाव और पृथक्करण, कई समानांतर तरीकों से घटित होता है। ईश्वर ने दुनिया की पूरी आबादी को दो समूहों में विभाजित और अलग किया; इब्रानियों और अन्यजातियों। ये इब्रानियों, अब इस्राएल राष्ट्र, को भी दो समूहों में विभाजित किया गया: 12 जनजातियाँ और लेवी की गोत्र। और हमने हाल ही में लेवी की गोत्र को दो समूहों में विभाजित होते देखा है, पुजारी और गैर-पुजारी, लेवी। विभाजन चुनाव और पृथक्करण की इस प्रक्रिया में, इस बात के लिए बिल्कुल भी योग्यता नहीं बताई गई है कि लोगों की एक निश्चित पंक्ति को दूसरे की तुलना में उच्च पवित्र दर्जा क्यों दिया जाना चाहिए। अब्राहम, इसहाक या याकूब के बारे में स्वाभाविक रूप से कुछ भी विशेष नहीं था। लेवी की गोत्र के बारे में स्वाभाविक रूप से कुछ भी विशेष नहीं था, और हारून के वंशजों (जो इस्राएल के पुजारी थे) के बारे में लेवी के किसी भी अन्य पुत्र की तुलना में कुछ भी विशेष नहीं था। ईश्वर ने बस, अपने अच्छे कारणों से उन्हें चुना।

उस व्यक्ति या समूह के बारे में जो दूसरों से अलग हो गया था और जिसे बाकी सभी से ऊपर पवित्रता का एक विशेष स्तर दिया गया था, उसके बारे में सबसे अच्छी बात यह कही जा सकती है कि उस व्यक्ति या समूह ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। प्यारे दोस्तों, आज हम में से जो लोग बचाए गए विश्वासियों के रूप में अलग रखे गए हैं, उनके लिए यही आदर्श है। हम किसी और से बेहतर नहीं हैं। हमने ऐसा कुछ नहीं किया है जिससे हमें ऐसा अनुग्रह मिले या जिसके हम हकदार हों। हमने बेहतर जीवन नहीं जिया है। ईश्वर की कृपा से हमें यह उद्धार दिया गया जो मसीहा यीशु के माध्यम से आया और जब प्रस्ताव पेश किया गया तो हमने इसे स्वीकार कर लिया। इसे स्वीकार करके हमें हमारे ग्रह पर अन्य सभी से ऊपर धार्मिकता और पवित्रता का एक विशेष स्तर दिया गया। यीशु में हमारा उद्धार उतना ही रहस्यपूर्ण है जितना कि "मैं क्यों?" जितना कि अब्राहम और किसी और के लिए नहीं, इसहाक और इश्माएल के लिए नहीं, याकूब और एसाव के लिए नहीं, लेवी के गोत्र के लिए क्यों और किसी अन्य गोत्र के लिए नहीं, हारून की वंशावली उसके भाईयों में से किसी एक के बजाय क्यों?

फिर भी ऐसा इसलिए है क्योंकि यह परमेश्वर की इच्छा है। इस्राएल परमेश्वर के लिए पूरी तरह से अलग राष्ट्र है, और बाकी दुनिया नहीं है। इस प्रकार इस्राएली (आज हम "यहूदी" कहेंगे) आप या मैं (गैर-यहूदी के रूप में) की तुलना में एक विशेष, उच्च स्थिति में पैदा हुए हैं। लेवी के गोत्र को शेष इस्राएल से एक पायदान ऊपर पवित्र दर्जा दिया गया था। हारून की पुरोहिती वंशावली को लेवियों को बनाने वाले अन्य परिवारों और कुलों की तुलना में और भी अधिक पवित्र दर्जा दिया गया था, और एलीआज़र (हारून के पुत्र) को उच्च याजकों की पंक्ति में सर्वोच्च पवित्र दर्जा दिया गया था।

हमने पिछले सप्ताह देखा कि खात के लेवी गोत्र को भी नियमित गैर-पुजारी लेवियों के अन्य कबीलों से थोड़ा अधिक दर्जा दिया गया था। इसलिए उन्हें तम्बू की सबसे पवित्र वस्तुओं को ले जाने का सम्मान दिया गया।

गिनती में कुछ और सिद्धांत भी शामिल हैं, जिन्हें हम पौलुस द्वारा नए नियम में, विशेष रूप से 1 कुरिंथियों 12 और 13 में विस्तार से समझाते हुए पाएँगे। एक यह है कि यहोवा अव्यवस्था नहीं, बल्कि व्यवस्था की माँग करता है, और इस प्रकार वह अधिकार के पदानुक्रम बनाता है। क्यों? क्योंकि यह उसका पैटर्न है, हम बाइबिल में सीखते हैं कि स्वर्ग भी पदानुक्रम घर बना है। इसलिए स्वाभाविक रूप से भौतिक दुनिया भी उस स्तर तक उसका अनुसरण करती है, जिस स्तर तक भौतिक सक्षम है। सभी मानव जीवन का मूल्य है; लेकिन परमेश्वर अपने उद्देश्यों के लिए

विभिन्न मनुष्यों को उच्च और निम्न मूल्य देता है, ठीक वैसे ही जैसे वह अपने आध्यात्मिक सेवकों, स्वर्गदूतों और करुबों को निम्न और उच्च दर्जा देता है। प्रभु की सेवा करने के लिए कई तरह की सेवाएँ उपलब्ध हैं (चारों ओर करने के लिए बहुत कुछ) लेकिन यह सब एक ही परमेश्वर की सेवा करने के उद्देश्य से है। 1 कुरिन्थियों 12:4 में पौलुस को संक्षेप में सुनें। अब वरदान तो कई तरह के हैं, परन्तु आत्मा एक ही है। 5 और सेवकाई भी कई तरह की है, परन्तु प्रभु एक ही है। 6 और प्रभाव भी अनेक हैं, परन्तु परमेश्वर एक ही है, जो सब में सब कुछ प्रभावशाली है। 7 परन्तु प्रत्येक को सब के भले के लिये आत्मा का प्रकटीकरण दिया गया है।

और जिस तरह से इस्राएल ईश्वर द्वारा नियुक्त संरचना वाला एक मण्डली है, उसी तरह से यीशु के शिष्यों का विश्वासी समूह भी ईश्वर द्वारा व्यवस्थित संरचना है। 1 कुरिन्थियों 12:28 में फिर से संत पौलुस को सुनें और ईश्वर ने कलीसिया में नियुक्त किया है। पहले प्रेरित, दूसरे भविष्यद्वक्ता, तीसरे शिक्षक, फिर चमत्कार, फिर चँगाई, सहायता, प्रशासन, विभिन्न प्रकार की भाषाएँ। 29 सभी प्रेरित नहीं हैं, है न? सभी भविष्यद्वक्ता नहीं हैं, है न? सभी शिक्षक नहीं हैं, है न? सभी चमत्कार करने वाले नहीं हैं, है न? 30 सभी के पास चँगाई का उपहार नहीं है, है न? सभी अन्य भाषाएँ नहीं बोलते हैं, है न? सभी अनुवाद नहीं करते हैं, है न? यह दूसरा सिद्धांत जो पहले के साथ जुड़ा हुआ है, वह यह है कि एक संपूर्ण और पूर्ण समुदाय बनाने के लिए विभिन्न कार्यों को करने के लिए विभिन्न कौशल और विभिन्न नौकरियों की आवश्यकता होती है। स्वाभाविक रूप से हम इस सिद्धांत को संत पौलुस द्वारा नया नियम में संबोधित पाते हैं क्योंकि यह मसीहा यीशु के आगमन के प्रकाश में आगे बढ़ाया गया तोरह है।

परमेश्वर ने मूसा से बात की, जो उन निर्देशों को हारून के पास ले गया, जो उन्हें पुजारियों के पास ले गया, जो उन्हें लोगों के पास ले गए। चूँकि वहाँ कई तरह के काम करने थे, इसलिए उन्हें देखने के लिए कई तरह के कार्यालय भी स्थापित किए गए थे। पुजारियों को कानून के रखवाले और शिक्षक होने के लिए बनाया गया था, लेवियों को पुलिस और पुजारियों के सेवक थे। पुजारियों और लेवियों के बीच भी नौकरियों को सावधानीपूर्वक सीमित इकाइयों में विभाजित किया गया था: कुछ पवित्र फर्नीचर के कुछ हिस्सों की देखभाल करते थे, अन्य पौधे और तम्बू खूँटे ले जाते थे, अन्य पहरेदारी करते थे, और इसी तरह। हाँ और कुछ दूसरों की तुलना में उच्च दर्जा रखते थे, लेकिन प्रत्येक को एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी थी और कोई भी भूमिका मनुष्यों के दिमाग को छोड़कर छोटी नहीं थी।

आज मसीह के शरीर के साथ भी यही सब है। किसी को अलग नहीं रखा गया है और किसी को भी छूट नहीं दी गई है, हर किसी का अपना कर्तव्य है। एक भी विश्वासी को आध्यात्मिक उपहार के लिए कभी भी अनदेखा नहीं किया गया। अगर कोई अपने काम को अनदेखा करना और किनारे पर बैठना चुनता है, तो इसका मतलब यह नहीं है कि उसके पास कोई उद्देश्य नहीं है। हम जितना चाहें शिकायत कर सकते हैं कि चर्च शायद टूटा हुआ है और खराब काम कर रहा है और दूसरों की गलतियों की ओर इशारा करते हैं। लेकिन कम से कम वे ऐसा करते हैं; कम से कम वे प्लेट पर खड़े होते हैं और अपने झटके लेते हैं। परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए जो व्यवस्था बनाई है, वह सही नहीं है।

लगभग 10 प्रतिशत लोग करते हैं और 90 प्रतिशत लोग देखते हैं। ईश्वर की आराधना करना और उसके साथ चलना एक संपर्क खेल है। यह खतरनाक है; और आपको चोट लग सकती है। अगर आप किसी हद तक घायल या चोटिल नहीं हैं, तो शायद आप बहुत लंबे समय से बाहर बैठे हैं।

इस तरह की निष्क्रियता मूसा के दिनों में, या राजा दाऊद के दिनों में, या यीशु के दिनों में बर्दाश्त नहीं की गई थी। हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि यहोवा अब हमें इससे बचने की अनुमति देगा, बिना किसी परिणाम की उम्मीद किए।

आइये गिनती अध्याय 5 पर नजर डालें।

## अध्याय 5

गिनती अध्याय 5 पवित्र या उन प्रयासों में से एक है, जो पहली नज़र में ऐसा लगता है जैसे कि दोहराव काम कर रहा है और इसलिए इसमें अतिरिक्त कुछ हासिल करने की नहीं है। तोरह के इस हिस्से को पढ़ने से पहले ही मैं यह कहना चाहता हूँ कि यह दोहराव से कहीं ज़्यादा प्रगतिशील प्रकाशितवाक्य है।

और पहले दो पैराग्राफ से ही इतना कुछ हासिल किया जा सकता है कि हम इस अध्याय को एक महीने तक पढ़ते हुए भी इसकी सतह को मुश्किल से छू पाएँगे। हम निश्चित रूप से अध्याय 5 में इतना समय नहीं बिताएँगे, लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप इसके महत्व से अवगत हों।

अगर हम इस अध्याय को कोई नाम दें, तो "अशुद्ध लोगों के शिविर को शुद्ध करना उपयुक्त हो सकता है। अब जबकि तम्बू इस्राएलियों के दैनिक जीवन का हिस्सा है और इसलिए उनके

बीच परमेश्वर की उपस्थिति सुनिश्चित है, यह आवश्यक है कि पूरे तम्बू क्षेत्र की पवित्रता तम्बू और उसके आँगन को अशुद्धता या गंदगी से मुक्त रखा जाए।

हमने पिछले पाठों में स्वच्छ और अशुद्ध तथा पवित्र और सामान्य विषय पर चर्चा की है।

लेकिन चूँकि काफी समय हो गया है, इसलिए हम उचित समय पर उन रातों की समीक्षा करेंगे। बस ध्यान रखें कि स्वच्छ और अशुद्ध, पवित्र और सामान्य, एक ही बात कहने के दो अलग-अलग तरीके नहीं हैं, वे प्रत्येक कुछ अलग अर्थ दर्शाते हैं।

हमेशा पूरे अध्याय को एक साथ पढ़ना सबसे अच्छा होता है ताकि संदर्भ स्पष्ट रूप से स्थापित हो सके। आइये ऐसा करें और फिर हम अपने पाठ के दौरान कुछ अंशों को पुनः पढ़ेंगे।

### गिनती अध्याय 5 सभी पढ़ें

यहोवा कहता है कि निम्नलिखित लोगों का उसके लोगों के बीच रहने के लिए स्वागत नहीं है, और फिर उन्हें तीन श्रेणियों में विभाजित करता है। इब्रानी में वे श्रेणियाँ हैं वे लोग जो 1) **तज़रा** हैं, जो **तज़रा** से पीड़ित हैं, एक त्वचा रोग; 2) **ज़ाव** से पीड़ित व्यक्ति, जननांग अंगों से स्राव, और 3) कोई भी व्यक्ति जो **तमी नेफ़ेश** है, मानव शव को छूने के कारण अशुद्ध है।

मूल रूप से ये अनुष्ठान अशुद्धता के 3 बहुत गंभीर प्रकार हैं, और प्रत्येक के लिए अनुष्ठान शुद्धि की 7 दिनों की अवधि की आवश्यकता होती है, जब यह निर्धारित हो जाता है कि अशुद्धता का कारण बनने वाली स्थिति अब मौजूद नहीं है। और चाहे पुरुष हो या महिला, इन अनुष्ठानिक रूप से अशुद्ध लोगों को इस्राएल की मंडली से निकाल दिया जाना चाहिए और शिविर के बाहर रखा जाना चाहिए। समझें कि इसका क्या अर्थ है: बहिष्कार। एक बार अनुष्ठान अशुद्धता शुद्ध हो जाने के बाद, अगर ऐसा कभी होता है, तो वह व्यक्ति समुदाय के बीच अपना जीवन फिर से शुरू कर सकता है। लेकिन तब तक, वह व्यक्ति समुदाय से अलग रहता है।

आमतौर पर बहिष्कृत लोग गाँव या शहर के बाहर गुफाओं या तंबुओं में रहते थे।

पद 3 में इन दुर्भाग्यपूर्ण लोगों से निपटने के इस कठोर तरीके का कारण बताया गया है: क) ताकि उनकी अशुद्ध स्थिति इस्राएल के शिविर में दूसरों को अपवित्र न करे, और क्योंकि इस्राएल के शिविर के बीच में परमेश्वर रहता है; इसलिए कोई भी अशुद्ध वस्तु उसके पास नहीं आ सकती। और पद 4 में कहा गया है कि इस्राएल ने इस निर्देश में यहोवा की आज्ञा का पालन किया।

तोरह क्लास में हमने जितने भी विषयों पर चर्चा की है, उनमें से शायद स्वच्छ और अशुद्ध, जिसमें कोषेर और गैर-कोषेर की श्रेणी भी शामिल है। 21 वीं सदी के पश्चिमी गैर-यहूदी दिमाग के लिए समझना सबसे कठिन है; और खास तौर पर एक ऐसे व्यक्ति के लिए जो पारंपरिक चर्च सेटिंग में पढ़ा है। जहाँ पादरी और शिक्षकों ने यह समझाने में खराब काम किया है कि इसका क्या मतलब है। और इसका आधुनिक विश्वासियों से क्या लेना-देना हो सकता है। आम तौर पर, जैसा कि आप में से अधिकांश जानते हैं, पूरी अवधारणा को आधुनिक ईसाइयों के लिए पूरी तरह से अप्रासंगिक माना जाता है और इसलिए इसे संबोधित करना भी व्यर्थ है।

अनुष्ठानिक अशुद्धता (जो अनुष्ठानिक अशुद्धता के समान ही है) इस्राएल के परमेश्वर की आराधना करने वालों के लिए एक बहुत ही गंभीर मुद्दा था और बना हुआ है, लेकिन इस पर नए नियम के विपरीत पुराने नियम में विस्तार से चर्चा की गई है। ऐसा क्यों है? मैं इस प्रश्न का उत्तर एक प्रश्न के साथ देना चाहता हूँ यीशु वा प्रेरितों ने वह सब क्यों दोहराया जो पहले से ही यहोवा के प्रति उचित आराधना और आज्ञाकारिता के आधार के रूप में स्थापित था? यीशु वचन थे; उन्हें अपने वचन को फिर से प्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं थी। वह पहले से तय की गई बातों का बचाव करने नहीं आए थे।

धार्मिक अशुद्धता इतनी गंभीर इसलिए है क्योंकि यह संक्रामक है, आध्यात्मिक रूप से संक्रामक। जब किसी को तज़ाराट (त्वचा रोग जिसे आमतौर पर कुष्ठ रोग के रूप में गलत तरीके से अनुवादित किया जाता है, और बेबीलोन के बाद तक इस्राएलियों के बीच कुष्ठ रोग भी मौजूद नहीं था) के साथ शिविर के बाहर रखा गया था, तो ऐसा इसलिए नहीं था कि किसी और को वह रोग न हो। बल्कि उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि तज़ाराट से पीड़ित व्यक्ति दूसरों को आध्यात्मिक रूप से अपवित्र करने की धमकी देता था, इस प्रकार उन्हें ईश्वर तक पहुँचने से रोकता था।

इसलिए इस्राएलियों के लिए त्वचा रोग, या जननांग स्राव, या मृत शरीर के संपर्क में आना (अन्य बातों के अलावा) सभी लगभग एक ही बात थी, कुछ दिनों से लेकर हमेशा के लिए ईश्वर और ईश्वर के समुदाय से अलग होना। और स्पष्ट रूप से यही प्रदर्शित करना था।

समस्या यह थी कि अनुष्ठानिक रूप से अशुद्ध व्यक्ति खुद के लिए खतरा बन जाता था क्योंकि अगर वह उस स्थिति में परमेश्वर के बहुत करीब आ जाता तो वह व्यक्ति नष्ट हो जाता। और वे पूरे समुदाय के लिए खतरा थे क्योंकि अशुद्धता संक्रामक थी। एक स्वच्छ व्यक्ति अगर किसी अशुद्ध व्यक्ति को छूता है तो वह खुद भी अशुद्ध हो सकता है बीमार नहीं बल्कि अशुद्ध।

एक अशुद्ध व्यक्ति अपनी अशुद्धता बर्तनों और पड़ों जैसी वस्तुओं, या यहाँ तक कि जिस कुर्सी पर वह बैठता है या जिस बिस्तर पर वह लेटता है, उसमें भी फैला सकता है। और फिर जब वह वस्तु अशुद्ध हो जाती है, तो वह अशुद्धता किसी स्वच्छ व्यक्ति में भी फैला सकती है, जो अनजाने में आकर उस कुर्सी पर बैठ जाता है, उस बिस्तर पर लेट जाता है, या उस बर्तन में खाना पकाता है।

अब मैं जानता हूँ कि आप में से बहुतों को ऐसा लगता है कि किसी व्यक्ति या वस्तु को छूने से अशुद्ध हो जाने जैसी बातें न्यू गिनी या ऑस्ट्रेलिया के किसी घने जंगल में रहने वाली पिछड़ी गोत्र के बारे में होनी चाहिए, और यहोवा के लोगों को नहीं। सतह पर यह जादू, टोना और अंधविश्वास की सबसे बुरी अवस्था लगती है। लेकिन यह आपको याद दिलाने का एक अच्छा समय है कि जबकि इनमें से हर एक नियम वास्तविक और निरपेक्ष था, और परमेश्वर का पूरा इरादा था कि उनका ईमानदारी से पालन किया जाए, वे एक साथ एक भौतिक प्रदर्शन और सीखने का साधन भी थे जो उत्तरोत्तर सबसे गहरे और सबसे महत्वपूर्ण आध्यात्मिक सत्य को प्रकट करने के लिए डिज़ाइन किए गए थे।

मैंने डॉ. रॉबर्ट मैकगी, सर्च फॉर सिग्निफिकेंस के लेखक के साथ आध्यात्मिक सत्य की प्रकृति और उन्हें शब्दों में कैसे व्यक्त किया जाए, इस बारे में एक शानदार चर्चा की। और हम इस बात पर सहमत हुए कि सबसे अच्छे रूप में, शब्द या शब्द चित्र, या यहाँ तक कि रेखाचित्र और चित्रण भी मनुष्यों को ईश्वर के सिद्धांतों और नियमों की अनंत गहराई या स्वर्गीय ऊँचाइयों को संप्रेषित करने में बहुत कम हैं। और इसका कारण सरल, फिर भी गहरा है; यहोवा आत्मा है जबकि हम शरीर हैं। आत्मा की दुनिया की सीमाएँ हो सकती हैं, लेकिन वे सीमाएँ जो भी हों, वे हमारी गंभीर शारीरिक सीमाओं की तुलना में इतनी विशाल हैं कि शायद यह कहना बेहतर होगा कि आध्यात्मिक दुनिया की कोई सीमा नहीं है। चाहे हम बचाए गए हों या नहीं, मनुष्य के रूप में हम लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई और समय के 4 आयामी ब्रह्मांड में रहते हैं। एक मानवीय शब्द चाहे वह विचार हो, या बोला गया हो, या लिखा गया हो केवल उन चीज़ों का सटीक वर्णन करने तक सीमित है जो उन्हीं 4 आयामों में काम करती हैं जिनमें हम रहते हैं। आत्मा एक 5वाँ या "अन्य" आयाम है, अगर आप चाहें। यह हमारी समझ या परिभाषा की क्षमता से बाहर की चीज़ है। आत्मा पहले 4 आयामों के साथ-साथ एक और आयाम नहीं है। आत्मा उन 4 आयामों से बिल्कुल अलग आयाम है जिनके बारे में हम जानते हैं। चार आयामी पदार्थ से बनी कोई भी वस्तु आप, मैं जिस कुर्सी पर आप बैठते हैं, जिस भवन में हम हैं, बाइबिल जो हम पढ़ते हैं और उसके पन्नों पर लिखे

शब्द, भौतिक वस्तु, पाँचवे आयाम की आत्मा का पूर्णतः वर्णन या यहाँ तक कि यथोचित चिंतन भी नहीं कर सकती।

इसलिए हम अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करते हैं। हमें ईश्वर के बारे में कुछ समझ है, लेकिन वास्तव में बहुत कम। वह हमारे हर प्रश्न का उत्तर नहीं देता क्योंकि हमारे पास उचित प्रश्न पूछने या पूर्ण उत्तर को समझने की क्षमता नहीं है। इसलिए जब बात तम्बू और वहाँ किए जाने वाले विभिन्न अनुष्ठानों और प्रक्रियाओं की आती है; और पुरोहिती, और बाइबिल के पर्व जो सभी आध्यात्मिक सिद्धांतों के केवल अत्यंत सीमित प्रतिरूप हैं, तो हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि भौतिक मॉडल ही सब कुछ है या यह पूरी तरह से पर्याप्त है। फिर भी हमें यह भी नहीं सोचना चाहिए कि भौतिक मॉडल गलत है या देखने लायक नहीं है यह मूल आध्यात्मिक वस्तु वा सिद्धांत की तुलना में अधूरा है जिसे यह प्रदर्शित या पूर्वाभास कर रहा है।

अब जब धार्मिक अशुद्धता के सिद्धांत और इस्राएलियों के शिविर की बात आती है, तो सबसे बड़ा खतरा और चिंता यह थी कि लोगों की निरंतर अशुद्धता शिविर को अपवित्र कर देगी, और शिविर इतना अपवित्र हो जाएगा कि परमेश्वर अपने लोगों के बीच नहीं रहेगा। एक बहुत ही निश्चित प्रतिफल मौजूद था: परमेश्वर अपने लोगों के बीच तभी तक रहेगा जब तक उसके लोग शिविर को धार्मिक रूप से साफ रखने में ईमानदारी बरतेंगे। इसे एक मिनट के लिए समझ लें: इस्राएली लोग, परमेश्वर के लोग, निश्चित दायित्व रखते थे यदि वे चाहते थे कि परमेश्वर उनके बीच में रहे। और मैं आपको स्पष्ट रूप से बता दूँ कि यहोवा के प्रति दायित्व का वह पैटर्न बना हुआ है, जैसा कि उसके सभी स्वर्गीय पैटर्न हैं; यदि हम चाहते हैं कि परमेश्वर हमारे साथ रहे तो हमारे पास परमेश्वर के प्रति दायित्व हैं। वे दायित्व धार्मिक अनुष्ठान के बारे में उतने नहीं हो सकते हैं जितने कि वे विश्वास के बारे में हैं, खासकर यीशुआ के आगमन के बाद से। फिर भी जैसा कि जेम्स ने कहा, बिना काम के विश्वास एक मृत विश्वास है। मैं इसे आधुनिक शब्दों में कहना चाहूँगा: एक तथाकथित आस्था जो ईश्वर के किसी भी निर्देश के माध्यम से उसकी ठोस सेवा नहीं करती, वह आस्था वास्तव में अस्तित्व में नहीं है।

चूँकि ईश्वर से निकटता एक स्वाभाविक रूप से खतरनाक प्रस्ताव है। इसलिए कई निवारक उपाय शुरुआत एक ऐसे पुजारी वर्ग से हुई जो पूरी ईमानदारी में शुद्ध था और जिसे यहोवा के निकट आने की अनुमति थी। अनधिकृत लोगों को दूर रखने और पास आने की कोशिश करने वालों को मारने के लिए लेवी रक्षकों को तैनात किया गया था; और अनुष्ठान अशुद्धता से निपटने की एक प्रणाली स्थापित की गई थी जिसमें क्षेत्र से अशुद्ध लोगों को हटाना और फिर, ज्यादातर

मामलों में, अशुद्ध लोगों को फिर से शुद्ध करना शामिल था ताकि वे अपने जीवन में ईश्वर की उपस्थिति का आनंद ले सकें।

यह एक और सिद्धांत है जो निश्चित रूप से कभी अप्रचलित नहीं हुआ है। विश्वासियों को हमेशा से ही निवारक उपाय करने की आवश्यकता रही है ताकि अनैतिकता, जो कि अशुद्ध व्यवहार है, को परमेश्वर के निकट न लाया जाए। और चूँकि यहोवा हमारे साथ रहता है (उसका आधुनिक निवासस्थान) इसलिए हमें अशुद्धता को अपने अंदर प्रवेश नहीं करने देना चाहिए क्योंकि यह उसे उसके निकट लाता है। हमें वेश्याओं के साथ नहीं जुड़ना चाहिए या किसी भी तरह के अनैतिक यौन संबंध में शामिल नहीं होना चाहिए। हमें बेतहाशा नशे में धुत्त होकर खुद को अपवित्र नहीं करना चाहिए। हमें झूठे देवताओं या मूर्तियों या बेकार प्रतीकों की पूजा नहीं करनी चाहिए। हमें लेवियों का रवैया अपनाना चाहिए क्योंकि हम सतर्क रहते हैं और परमेश्वर की पवित्रता के लिए हर खतरे को दूर भगाते हैं जिसने हमें अपनी उपस्थिति से सम्मानित किया है।

फिर भी मनुष्य अशुद्धता से बच नहीं सकता, और यह वास्तविकता आदम और हव्वा के पतन से जुड़ी है। शायद प्रायश्चित के दिन योम किप्पुर का मुख्य कारण यह था कि महायाजक पवित्र स्थान (परमेश्वर का सांसारिक निवास स्थान) से सारी अशुद्धता हटा सके जो पिछले वर्ष के दौरान बनी थी। मात्र तथ्य यह है कि मनुष्य, नियमित इस्राएली और पुजारी, पवित्र स्थान में और उसके आस-पास लगातार मौजूद थे, इसका मतलब था कि अपूर्णता और इसलिए पाप और अशुद्धता मौजूद थी, और इसने उस स्थान को अपवित्र कर दिया। यहाँ तक कि महायाजक को भी पूर्ण नहीं माना जाता था; उसे केवल सर्वोच्च पुरोहित पद का धारक घोषित किया गया था, और प्रभु की सेवा के लिए कुछ महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिकृत किया गया था।

हम अगले सप्ताह इस विषय पर चर्चा जारी रखेंगे।